अनुवाद अध्ययन

कुमार सुशील
पायलदीप

अनुवाद अध्ययन

डॉ. कुमार सुशील

डॉ. पायलदीप

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जनवरी, 2025

© डॉ. कुमार सुशील, डॉ. पायलदीप

अनुक्रमणिका

शब्द प्रस्तुति 3

भूमिका 7

1. अनुवाद की परिभाषा 18

2. अनुवाद के प्रकार 34

3. अनुवाद का इतिहास 48

4. हिन्दी साहित्य : अनुवाद की परंपरा 83

5. अनुवाद का महत्व 154

6. अनुवाद की राजनीति 166

7. साहित्य का अनुवाद 188

8. मशीनी अनुवाद 205

9. अनुवाद और लिंग का प्रश्न 217

10. अनुवाद: कुछ अन्य पक्ष 230

11. अनुवाद का अभ्यास 260

परिशिष्ट 269

Works Cited 325

संदर्भ ग्रंथ सूची 352

शब्द प्रस्तुति

बात एक भाषा में लिखी गई कृति का दूसरी भाषा में अनुवाद तक ही सीमित नहीं है। दो भाषाओं के आदान-प्रदान के लिए अनुवाद या व्याख्या को सीमित करना, अनुवाद को कुछ सीमा तक अकादमिक गतिविधि बनाता है। अनुवाद 'गतिविधियों का, मनुष्यों का और संपूर्ण मानव अस्तित्व का होता है। अनुवाद कोई one time activity (एक बार की गतिविधि) नहीं है बल्कि यह एक सतत और अंतहीन प्रक्रिया है। अनुवाद हमारे माध्यम से ही होकर जाता है और आगे से आगे बढ़ता रहता है। हम सभी अनुवाद के product (उत्पाद) और अनुवाद के producer (निर्माता) हैं। हमारे बीच कौन ऐसा व्यक्ति है जो यह दावा कर सकता है कि क्या वह सच्चा और शुद्ध मौलिक प्राणी है? हम DNA की सीमा तक translated हैं। जैसा कि सदियों से genetic mutation (अनुवंशिक परिवर्तन) हुआ है, ये निरंतर परिवर्तन अनुवाद की घटना को इतिहास और भूगोल के सीमित समय और दायरे से परे ले जाते हैं। यह बात तो अनुवाद को व्यापक संदर्भ में देखने की बात है।

अब बात भारतीय उपमहाद्वीप के संदर्भ में भी करने की आवश्यकता है। भारतीय कल्पना में अनुवाद everyday activity (दैनिक गतिविधि) है। एक सामान्य भारतीय कम से कम दो-तीन-चार भाषाएं, उप भाषाएं और बोलियां जानता है और

वह उनका प्रयोग करता रहता है। बहुत ही सहज और स्वाभाविक ढंग से, उसे यह पता नहीं लगता कि वह स्वभाविक ही अनुवाद का काम कर रहा है। प्रत्येक भारतीय एक चलता-फिरता language का museum (अजायब घर) है और आर्काइव भी है, जहाँ विभिन्न भाषाएँ एक-दूसरे के साथ परस्पर क्रिया करती हैं और लगातार अंतर-भाषाई संयोजन बनाती हैं।

भारतीय होने का भाव ही गैर-मौलिक होना है। यदि इस बात को positively समझा जाए तो प्रत्येक भारतीय मौलिक रूप से अनुवादित है और उसका अनुवादित होना कमजोरी नहीं, विजय है। अनुवादित होने का अर्थ है किसी के प्रति खुला होना, किसी से प्रभावित होना और किसी को प्रभावित करना।

पंजाबी अस्तित्व तो और भी मिश्रित है। कौन-सी सभ्यता या संस्कृति है जो पंजाब के मैदानी क्षेत्रों में मिश्रित और स्वीकृत नहीं हुई? Indo-Greece के इस्लामिक प्रभावों ने आज तक पंजाब की जमीन पर अपना रंग फैलाया हुआ है। मैं समझता हूं कि कुमार सुशील और पायलदीप की यह पुस्तक अनुवाद की इस प्रक्रिया को अकादमिक रूप से व्यवस्थित करने का एक प्रयास है जो geological (भूवैज्ञानिक), ऐतिहासिक और समसामयिक भी है। जब विषय इतना गंभीर और दूरगामी हो तो उसके कई अलग-अलग पक्ष होना अनिवार्य है। इस पुस्तक में इन विभिन्न पहलुओं को संभालने का प्रयास किया गया है। इनमें से कुछ पाठ, विशेष रूप से 'अनुवाद की